Philosophy B.A. III (Hon's)
Paper - V

Topic – Conversion

धर्मान्तरण पर एक लेख या धर्मान्तरण की समस्या ?

'कनवरसन' शब्द का दो अर्थ होता है- धर्मपरि[illegible] तथा धर्मान्तरण। इस 'कनवरसन' शब्द की अलग-अलग व्याख्या अपेक्षित है। तत्पश्चात भारतीय संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर विचार करना उचित होगा।

धर्म परिवर्तन को जीवन परिवर्तन, मन परिवर्तन, पुर्नजीवन, रूपान्तरण आदि प्रत्ययों से सूचित किया जाता है। धार्मिक परिवर्तन एक धार्मिक तथ्य है जो सार्वभौम है। इसके द्वारा धार्मिक वास्तविकताओं का सम्यक ज्ञान होता है अर्थात एक दिव्य ज्योति की प्राप्ति होती है जिसके फलस्वरूप मानव जीवन में गहन परिवर्तन परिलक्षित होता है। धर्म परिवर्तन द्वारा चिर शान्ति एवं अनंत आनंद की प्राप्ति होती है। हर धर्म में तथा हर मानव के लिए धर्म परिवर्तन के मार्ग खुले हुए हैं। उदाहरणार्थ तुलसी को राम के दर्शन, मुहम्मद को अल्लाह के, संतपाल को ईसा, बुद्ध को बोधिसत्व तथा रामकृष्ण परमहंस को काली के दर्शन हुए। जिसके फलस्वरूप इनका रूपान्तरण हुआ और दिव्य पुरूष कहलाये।

अब प्रश्न उठता है कि धर्मपरिवर्तन का उद्भव किस प्रकार सम्भव है ? ईश्वरवादियों का कहना है कि ईश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही धर्म परिवर्तन सम्भव है जबकि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यह मनुष्यों के निजी प्रयत्नों के द्वारा ही सम्भव है।

धर्म परिवर्तन की तीव्र इच्छा रखने वाले व्यक्ति में कुछ निर्धारित तत्वों का होना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

जैसे- अपनी अपूर्णता का ज्ञान होना, अपने उद्देश्य के प्रति जागरूक होना सत्ता के प्रति आत्मसमर्पण का भाव होना तथा धार्मिक शिक्षा का होना आवश्यक है। धार्मिक शिक्षा से धार्मिक संस्कारों का सृजन होता है जो मानव के धर्मपरिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

धर्मपरिवर्तन के दो प्रकार माने गए हैं- संकल्पनात्मक धर्मपरिवर्तन, आत्मसमर्पण विषयक धर्मपरिवर्तन। संकल्पनात्मक धर्म परिवर्तन आकस्मिक नहीं बल्कि क्रमिक प्रक्रिया द्वारा प्राप्त होता है। इससे मनुष्य स्वयं के अशुभ कर्मों से शुभ कर्मों की ओर रूपान्तरित करता है। ~~जबकि आत्मसमर्पण~~ आत्मसमर्पण विषयक धर्म परिवर्तन में मनुष्य स्वयं को उच्चतम सत्ता के अधीन समर्पित कर देता है। जहाँ भावना और संवेग की प्रबलता रहती है।

कनवरसन का दूसरा अर्थ धर्मान्तरण है जब किसी विशेष धर्म का अनुयायी अपने धर्म को त्याग कर किसी अन्य धर्म को अपनाता है तो इसे धर्मान्तरण कहते हैं। धर्मान्तरण की अवधारणा धर्मों की अनेकता में निहित है। विश्व में अनेक धर्म है इसलिए मनुष्य एक धर्म को त्याग कर दूसरे धर्म को अंगीकार करने में सक्षम हो पाता है।

धर्मान्तरण धार्मिक स्वतन्त्रता की देन है। धार्मिक स्वतन्त्रता के बिना धर्मान्तरण का कोई अर्थ नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि धर्मान्तरण के क्या कारण हैं? धर्मान्तरण के निम्न कारण हैं—

1) धर्मान्तरण का मुख्य कारण निर्धनता है। इससे पीड़ित व्यक्ति आर्थिक प्रलोभन में आकर अपने धर्म को परिवर्तित कर लेता है।

Scanned with CamScanner

2. शिक्षा के अभाव में व्यक्ति को अपने धर्म का सम्यक ज्ञान नहीं होने के कारण, वह धर्मान्तरण करता है।

3. कभी-कभी राजनीतिक हस्तक्षेप के फलस्वरूप व्यक्ति एवं समुदाय का धर्मान्तरण होता है।

4. प्रेम विवाह के फलस्वरूप भी धर्मान्तरण होता है

5. हिन्दू धर्म में कर्मकाण्डों की जटिलता एवं जातिप्रथा भी धर्मान्तरण का कारण है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या धर्मान्तरण की आवश्यकता है जब सभी धर्म मूलतः सामान्य है तथा सभी धर्म किसी न किसी सत्य को इंगित करते है। इसलिए किसी एक धर्म को छोड़कर किसी दूसरे धर्म को अपना कोई मायने नहीं रखता है।

महात्मा गाँधी ने भी धर्मान्तरण को सही नहीं ठहराया है। इनके विचार से प्रत्येक धर्मावलम्बी को अपने धर्म को सबल बनाने का प्रयास करना चाहिए। एक हिन्दू को अच्छा हिन्दू, एक मुसलमान को अच्छा मुसलमान तथा एक सिख को अच्छा सिख बनने का प्रयास करना चाहिए। विवेकानंद ने भी धर्मान्तरण को अधर्म की संज्ञा दी है।

इसके अतिरिक्त धर्म से संस्कृति का गहरा सम्बन्ध होता है। यदि कोई व्यक्ति धर्मान्तरण करता है तो वह अपनी संस्कृति को त्यागता है, जिसे हम सही नहीं मान सकते।

उपरोक्त विवेचना के बाद हम धर्मान्तरण की समस्या पर विचार करेंगे। किसी भी विवशता में आकर

Scanned with CamScanner

व्यक्ति धर्मान्तरण तो कर लेता है लेकिन नवीन धर्म का पालन आत्मा या अन्तरात्मा से नहीं कर पाता है क्योंकि धर्म का सम्बन्ध हमारे आन्तरिक जीवन से है। हमारे संस्कारों पर इसका गहरा प्रभाव होता है। ऐसा देखा गया है कि एक हिन्दू जो हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई धर्म को अपनाया है तो वह संकट के क्षणों में जिसका वह अनन्य भक्त था को याद करता है, उसकी वन्दना करता है। वह संकट निवारण हेतु ईसामसीह की प्रार्थना नहीं कर पाता और न गिरजाघर जाने की आवश्यकता महसूस करता है। जन्म से ही उसके संस्कारों पर हिन्दू धर्म की अमीट छाप है। अतः धर्मान्तरण से वह न तो सच्चा हिन्दू बन पाता है और न सच्चा ईसाई बन पाता है यही वजह है कि अधिकांश उदाहरण में धर्मान्तरण केवल सैद्धान्तिक धरातल पर ही कार्यान्वित हो पाता है व्यवहारिक धरातल पर नहीं।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि धर्मान्तरण के बजाय व्यक्ति को आत्मपरिवर्तन करना चाहिए सभी धर्मों में सामान्यतः एक ही बात की शिक्षा दी गई। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति ज्ञान एवं प्रेम रखना चाहिए तथा दूसरे धर्मों के प्रति घृणा का भाव भी नहीं रखना चाहिए। अतः धर्मान्तरण का कोई औचित्य नहीं है।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner